भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 2	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
गुरुवार, 26.2. 98	फरवरी, 1998	प्रति अंक : 05.00

ब्रह्मप्रवाह

भ्रमित मन से समझौते और खुद से धोखाधड़ी

सत्पुरुष के समागम के रूप में हमें अलौकिक सत्संग प्राप्त हुआ है।
फिर भी,
निर्गुण सुख अखंड रहता नहीं है
और
अंतर में क्षोभ, जलन (हायतोबा) और परेशानी
पल-पल होती रहती है
एवं
सत्व, रज और तम के वेग में
सच्ची निष्ठा वाले हरिभक्तों के प्रति घृणा-ऊब आ जाती है।
उसका मुख्य कारण हमारी बुद्धि की जड़ता
और
प्रगट स्वरूप के प्रति की असाधारण प्रीति की कमी है।
बाह्यदृष्टि से ही सारे मूल्यांकन करने की हमें आदत पड़ी हुई है,
जिससे अंतःकरण के भावों में खींचे जाते हैं
और
सत्संग की दिव्य प्रवृत्तियों में या क्रियाओं में
या
सत्पुरुष की आज्ञा पालने में मन गलत तरीके से–
हमें पता भी नहीं चले यूं ऊपरी-ऊपरी दिखावे में ढल कर
उस भ्रमित मन से हम समझौते कर लेते हैं
और
आखिर (वह मन) हमारे जीव को सत्य जीवन जीने में
खुद से धोखाधड़ी रूपी गुत्थी में डाल कर, जकड़ कर
अति बड़े पुरुष को मोहताज़ बना कर
अव्यक्त राग या स्वभावों की पुष्टि की ओर ही प्रयास करवाता है।
यूं **स्वरूप को ही समझने की कमी के कारण**
हम उनमें मनुष्यभाव लाते हैं
और
आखिरकार जीव सत्संग से गिरता जाता है,
दुःखी होता है और कोई प्रसंग बनने पर विमुख तक हो जाता है।
सो, **शुद्ध मुमुक्षु जीव सबसे पहले**
स्वरूपनिष्ठा ही स्पष्ट समझने का प्रयत्न करें
और
सच्चे संत के वचन से ही गुणातीत ज्ञान की समझ दृढ़ कर लें।
फलस्वरूप निर्विकल्प उत्तम निश्चय सिद्ध हो जाए
व
जीव ब्रह्मरूप होकर जीतेजी भगवान के दिव्य स्वरूप में ही जुड़ सकें।
मन की चालाकियाँ
और
भ्रमित मन से किये झूठे समझौते को समझने के लिए
सत्संग होने के बाद केवल अंतर्दृष्टि ही करने की आदत डालनी पड़ती है,
जिससे अलौकिक सत्संग के प्रताप से सब कुछ
नजर आ जाएगा।

दर्पण में रुप जैसा है, वैसा दिखाई पड़ता है,
यूं ही हमारी जाति, स्वभाव व अज्ञानता से खड़ा करा हुआ जगत
और
वैसी ही बाह्य संबंधों की क्षुल्लुकता, असत्यता
तुरन्त दिखाई पड़ेगी।
भजन करने वाले भक्त को सच्चे संत ऐसी ही आज्ञा करते हैं,
जिससे कि उसका मूल अज्ञान नष्ट होकर,
असली स्वरुप का दर्शन करवा दे
और
स्वभाव टल जा कर जीव शुद्ध हो।
सद्भाग्य से हमें ऐसे अति बड़े पुरुष–
प्रगट ब्रह्मस्वरुप सद्गुरुवर्य योगीजी महाराज प्राप्त हुए हैं।
तो, पहली पैड़ी के रुप में **उनके सभी सूचन-बातें**
अपने पर ही लेकर सतत् अंतर्दृष्टि करके,
समग्र सत्संग में दिव्यता की दृढ़ता करके
सेवा किया करने की आदत डालनी,
जिससे सरलता से आत्मसत्ता रुप वर्ता जाएगा
और
महाराज की दिव्यमूर्ति का सुख जीतेजी अनुभव होगा।
मंदिरों की, संस्था की या युवक मंडलों की क्रियाएँ
केवल सात्विक आनंद ही दे सकती हैं।
श्रीजी महाराज ने भक्तचिंतामणि के प्रकरण 164 में
व
दूसरे वचनामृतों में यह बात स्पष्ट रुप से समझाई है।
अगर वही सारी क्रियाएँ, प्रवृत्तियाँ यदि
प्रगट सत्पुरुष की प्रसन्नता पाने के लिए ही करी जाये तो
निर्गुण सुख, शांति और दिव्यानंद प्राप्त हो सकता है।
पर, हमारे मन, चित्त व बुद्धि
ऊपर-ऊपर की सेवा, समागम या कसनी सहने की क्रियाएँ
करते हुए भ्रम से भरा झूठा अहंकार खड़ा करते हैं
व
कई बहाने निकाल कर अपनी विशेषताएँ गा-गाकर
सूक्ष्म देहाभिमान को पोस कर खुद से धोखाधड़ी खेल जाते हैं।
फलस्वरुप हमें प्रत्यक्ष सत्पुरुष में मनुष्यभाव आ जाता है
और
आज्ञा की आड़ में
हमारे राग व स्वभावों की ही पुष्टि होती जाती है।
सो, **सत्पुरुष की ही अंतर की मर्जी,**
रुचि-अभिप्राय समझ कर सत्संग की प्रवृत्ति करते जाएं,
तो सभी प्रकार से सभी को आनंद-आनंद आएगा
और
अन्य धर्म वालों को भी आदर्श मिल जाएगा।
हमारे साधन, हमारे मत-विचार, मान्यताएँ
और
दृढ़ हो चुकी हमारी भावनाएँ
प्रत्यक्ष सत्पुरुष की जैसी है वैसी यथार्थ महिमा समझ कर,
उसके मुताबिक उन्हें अंतर्यामी, सर्वज्ञ और निर्दोष ही
समझ कर क्रिया करने में बाधारूप बनते हैं
व
हरिभक्तों में आपस-आपस में फर्क खड़े कर देते हैं।
सो, **हमारे सद्गुरु प.पू. योगीजी महाराज को मन सौंप कर,**
जो कुछ थोड़ी-सी अल्प सेवा बन सके;
वह स्वधर्म युक्त करने की आदत डालने वाले
सरल प्रकृति के हरिभक्त को तत्काल ही जीव में
बल मिल जाता है।
युवकों के वर्तन से व उनके साथ रह कर
उनका समागम करने पर–
उनकी स्वरुपनिष्ठा की बातें सुन कर
इस बात की अब हमें जरुर प्रतीति होती जाती है।
तो हम सब गुरुमुखी ही बन कर ऐसी अनन्य निष्ठा दृढ़ करें,
जिससे कि प.पू. योगीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त हो जाए
और.....
'ऐसे संत की अखंड प्रसन्नता रहे–यही आखिरी जन्म'-
यह प्रतीति हो जाये।
ऐसा उत्तम सत्संग करना या करवाना यानि कि–
'हम खुद कैसे सत्संगी हो पाये हैं'?
उसकी सतत् अंतर्दृष्टि की आदत डाल कर लेखा-जोखा रखना
जिससे कि – थोड़े समय में ही
मन और बुद्धि की बहानेबाजी दूर होकर
जीतेजी ही अक्षरधाम का दिव्य सुख प्राप्त कर पायें।
ऐसा मौका, दर्शन, बातें
व
संत की प्राप्ति दोबारा मिलने वाली नहीं।
सो, संत समागम की ही लगनी लगा देना।
सभी को ऐसा ज्ञान प्राप्त होता जाए–यही नम्र प्रार्थना है !

– प.पू. काकाजी महाराज
अप्रैल, 1959

✡✡✡✡✡

गुरुजी, तुमको लग जाए हम सब की उम्मरीया.....

अहो ! **1 फरवरी '98** का मंगलकारी दिन... बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन और 1997 में हुए 'गुरुभक्ति यज्ञ' के प्रारंभ की स्मृति कराता हुआ यह दिन अब और भी नई स्मृति रुप बन गया.... क्योंकि ऑप्रेशन के बाद करीब डेढ़ महिने के पश्चात् हम सभी के प्यारे प.पू. गुरुजी मुंबई से दिल्ली पधारे.....

31 जनवरी '98 की सुबह से ही सेवकगण प.पू. गुरुजी के स्वागत की तैयारियों में लग गये.....सभी के भीतर में अद्‌भुत उमंग और प.पू. गुरुजी के दर्शन की उत्सुकता थी। सो, अपनी-अपनी भावना लिए हुए सभी लग पड़े थे और पूरे अनिर्देश में खुशी की लहर दौड़ गई.....अनिर्देश मंदिर में बाहर के प्रांगण में प.पू. गुरुजी के लिए आसन लगाया था। लाल रंग लिए दिल के आकार में सभी की ओर से प्रार्थना लिखी थी कि–

' हे गुरुजी !

हमारी चित्तशुद्धि के लिए, खेलो ना अपने दिल से,

देह से अलग दिखते हुए भी, एक हो जाएंगे सभी दिल से....'

भावना-भक्ति से भरपूर कलात्मक डिज़ाईन का गलीचा बनाया गया..... यूं तैयारियाँ करते-करते 1 फरवरी '98 की सुबह भी आ गई !

1 फरवरी '98 को सुबह 11.45 के करीब प.पू. गुरुजी 'पालम' एयरपोर्ट उतरे ! प.पू. गुरुजी के मुख पर भावात्मक खुशी देखते ही लग रहा था कि उनको भी अपने दिव्य परिवार से मिलने का कितना इंतज़ार होगा..... सेवकों द्वारा भावपूर्ण हृदय से फूलों द्वारा सजाई गाड़ी में प.पू. गुरुजी एयरपोर्ट से अनिर्देश मंदिर के लिए रवाना हुए.....रास्ते में प.भ. मल्कानी साहेब के नवजात पोते **'विवेक'** को पहली बार देख कर प.पू. गुरुजी करीब सवा बजे मंदिर पहुँचे..... बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक करीब ढाई घंटे तक खड़े-खड़े ही प.पू. गुरुजी की बेसब्री से राह देख रहे थे.....एक अरसे के बाद प.पू. गुरुजी का सान्निध्य प्राप्त हो रहा था–इस भावना को लिए हुए पंजाब से आए मुक्तों का भी तांता जैसा लगा था.....और अब तक पंजाब से मुक्तों का कोई ना कोई ग्रुप आता ही रहा है। इस दिन तो सेवकों–हरिभक्तों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा.....सभी मस्ती से नाचने–भांगड़ा करने लगे और मानो प.पू. गुरुजी के आगमन से अनिर्देश के पत्ते-पत्ते में जान आ गई....और साथ ही यह भी बात याद आई कि–'सच में, धर्म धर्मी के अधीन होता है.....' प.पू. गुरुजी के आने से अनिर्देश मंदिर में खुशियों की श्रृंखला सी बन गई.....

मंदिर में प्रांगण में लगाए आसन पर विराजमान होने के बाद प.पू. गुरुजी ने बसंत पंचमी–गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्राकट्य दिन निमित्त बात करते हुए मुख्य सारुप संदेशा यही दिया कि–'.....**सभी एक-दूसरे से मिलकर रहेंगे, तो महाराज कभी भी मुझे या पू. भाईस्वामिजी या पू. दीदी को बीमारी नहीं देंगे**'! प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन पाने के बाद सभी ने प्रसाद लिया.....

प.पू. गुरुजी के दिल्ली आगमन से उस दिन सभी के मन में जो एक भावना बसी रही थी, वह बाद में एक दिन सभा में प.भ. चड्डाजी द्वारा कही पंजाबी की निम्न कहावत से उभर आई, जिसे सुनकर सभी हरिभक्तों की आँखें तो नम हो ही गई– बल्कि प.पू. गुरुजी की आँखें भी भर आईं.....

'सौ दारु (दवा) इक घियो

सौ चाचे इक प्यो.....'

यानि–देसी घी का मुकाबला सौ दवाएँ नहीं कर सकती, वैसे ही एक पिता की जगह सौ चाचे नहीं ले सकते.....

सच ! दिल्ली के हम सभी भक्तों से अत्यधिक लगाव के कारण ही प.पू. गुरुजी ठंड की परवाह न करके जल्दी ही वापिस आ गए और.....सभी पर प्रभु ने भी ऐसी कृपा बरसाई कि उसी दिन से मौसम भी पलटी मार गया व प.पू. गुरुजी का स्वास्थ्य भी अच्छा है, लेकिन अभी भी उन्हें दायने हिस्से में थोड़ी सी तकलीफ है। तो, हम सभी को तीव्र प्रार्थना करनी है कि प.पू. गुरुजी जल्द से जल्द पहले से भी अधिक तेजी से चलते-फिरते, कार्य करते हुए–वही मूर्ति का सुख देते हो जाएं.....

और..... खुशियों की श्रृंखला में **15 मार्च '98–प.पू. गुरुजी** की जन्म जयंती भी नज़दीक आ रही है कि जब सभी मुक्तों को अपने हृदय की भावना व्यक्त करने–प.पू. काकाजी का ऋण चुकाने तत्पर होना है। प.पू. गुरुजी केवल प.पू. काकाजी के सिद्धांतों को पकड़ कर चल रहे हैं और दिल्ली में एक अद्‌भुत निष्ठावाला समाज बनाना चाहते हैं। प.पू. काकाजी दिल्ली आते तो अक्सर अपने प्रवचन में कहते कि–'मैं चाहूं तो यहां से मेरठ तक की लाईन लगा दूं, लेकिन मैं ऐसा नहीं करूंगा क्योंकि मैं तुम लोगों के लिए हूँ.....' उनका यही सिद्धांत था– 'पाँच दृढ़ निष्ठा वाले परिवार पक्के हो जाएं, तो

भी मेरा परिश्रम सफल हुआ मानूंगा.....' आज प.पू. गुरुजी की भी हम सभी से यही अपेक्षा है। तो क्यों ना जन्म जयंती के शुभ अवसर पर प.पू. गुरुजी की इस चाहना को साकार रूप देने हम दृढ़ संकल्प करें और उन्होंने हम सभी के लिए जो परिश्रम किया है, उसे सार्थक कर दें.....

साथ ही एक अन्य हर्ष की बात यह है कि मंदिर के सेवक **प.भ. निर्दोष** व **प.भ. ऋषि** को **दीक्षा** देने के दिन भी अब प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी की आज्ञा लेकर प.पू. गुरुजी ने निश्चित करवा दिए हैं..... 7 मार्च '98, शनिवार को ब्र.स्व. प.पू. काकाजी के स्वधामगमन के दिन इन दोनों सेवकों को 'पार्षदी दीक्षा' दी जाएगी और 15 मार्च '98, रविवार प.पू. गुरुजी की जन्म जयंती के उत्सव के दिन प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के वरद् हस्तों से 'भागवती दीक्षा' दी जायेगी।

इसी संदर्भ में ब्र.स्व. प.पू. काकाजी द्वारा पू. सुहृद्स्वामी को दीक्षा देते हुए कहे वचन याद आ जाते हैं कि –**'लो, दिल्ली मंदिर के लिए साधु भी किये'**! सो, गुणातीत का संकल्प यानि– महाकाल ! और..... देखा जाए तो ब्र.स्व. प.पू. काकाजी के कार्य में साथ देने के लिए प.पू. गुरुजी को और मजबूत चैतन्य मिल जाएंगे। बस ! महाराज, स्वामी, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी व सभी प्रगट गुणातीत स्वरुपों के चरणों से प्रार्थना कि–ये दो सेवक जो साधु बन कर 'भागवती तनु' प्राप्त करने निकल रहे हैं, वे प.पू. गुरुजी की मर्जी मुताबिक वर्त कर जीवन धन्य कर लें और हम भी इस मंगलकारी अवसर पर प्रार्थना करने का मौका लूट लें.....

✡✡✡✡✡

बृहद् गुणातीत समाज के आत्मीय प.भ. मल्कानी साहेब — 'गॅट वेल सून'

ब्र.स्व. प.पू. काकाजी के संकल्परूप प.भ. मल्कानी साहेब व उनकी सर्वदेशियता से सारा गुणातीत समाज परिचित ही है। 9 फरवरी '98 को प.भ. मल्कानी साहेब की दिल्ली के 'एस्कॉर्ट' अस्पताल में बाईपास सर्जरी हुई है। भक्त वत्सल प.पू. पप्पाजी व प.पू. स्वामिश्री उनके ऑप्रेशन से पहले ही दिल्ली आ गए थे..... विशेष लगाव के कारण, खुद की भी बाईपास सर्जरी अभी-अभी होने के बावजूद प.पू. गुरुजी भी प.भ. मल्कानी साहेब के अस्पताल जाने से पहले उनसे मिलने फार्म पर गए..... सभी गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद व भक्तों की प्रार्थना से प.भ. मल्कानी साहेब का ऑप्रेशन अच्छी तरह हो गया है। अभी अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद वे अपने 'फार्म' पर आराम के लिए रह रहे हैं..... साथ ही प.पू. पप्पाजी व मुक्त मंडल फार्म पर ही उनके लिए भजन-प्रार्थना के लिए रुका हुआ हैं.... सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि प.भ. मल्कानी साहेब जल्दी से अच्छे होकर अपने व्यवहार व गुणातीत समाज के लिए पहले से भी अधिक कार्यरत हो जाएं.....

स्वामी की बातें

606. **महाराज ने** तो यूं **कहा है** कि **सहला-सहला कर लाड से जो रखे, उसके पास नहीं रहना।** बाकी जैसी तुम्हारी सूझ–वैसा करना। हम तो, आत्मानंदस्वामी बहुत टोकते थे, सो उनके साथ रहे और ब्रह्मानंदस्वामी के पास रहता था, वहां से निकले। **टोके बिना तो कसर टलती नहीं** और जहां अच्छा-अच्छा खाना मिले, वहां बार-बार जाते हैं। पर, केवलात्मानंदस्वामी को तो यदि कोई पक्की रसोई के लिए कहता, तो वे कहते कि जूनागढ़ स्वामी को काग़ज लिख कर पुछवाया है, वहां से आज्ञा आएगी तब लेंगे। यूं बहाना निकाल कर स्पष्ट ना कर देनी और दाल-रोटी की सादी रसोई लेनी व दो दिन रुक कर वहां से चल पड़ना। पर मीठा, चिकना-चुपड़ा, छोंका-मिर्च मसाले वाला खा-खा कर खूब तान कर सोये रहोगे, तो काम और क्रोध बढ़ेंगे। हमें तो धर्मामृत, निष्काम शुद्धि और शिक्षापत्री इन तीन ग्रन्थ के मुताबिक रहना–यूं महाराज ने कहा है..... इन तीन ग्रंथों में लिखे से अधिक कपड़े या पदार्थ रखेंगे या खाया करेंगे तो बंधन होगा और **फिर उसका तो आगे जवाब वसूल होगा।** *प्र-6, 48*

607. रुचि का वचनामृत पढ़वा कर कहा कि–**यह बात तो गरज रखने वालों के लिए है।** जिसे गरज नहीं वह तो मौका मिलने पर स्वाद भोग ले। उसे तो यही तान रहती है कि कब मौका मिले? ऐसों को तो महाराज ने वचनामृत में लंपट कुत्ते जैसा कहा है। **जिसे लगाव हो उसे ये बातें अच्छी लगेगी, वर्ना तो हम भले ही लाखों बातें करते रहें लेकिन यूं नहीं माना जाता।** *प्र-6, 49*

608. इस लोक की प्रीति तो कैसी है? यूं कह कर एक पटेल का दृष्टांत विस्तार से बताया। उसके परिवार को उस पर जान छिड़के ऐसा लगाव था। लेकिन जब एक साधु के कहने पर बीमार हुआ और उसके ऊपर से साधु ने दूध वार दिया, वह किसी ने नहीं पीया ! इस प्रकार साधु ने सच्चाई का दर्शन कराया कि... ऐसे खोटे लगाव हैं। गृहस्थ को उसके लड़के कहा ना मानें तो दुःखी होते हैं। पर, वह तो सब अपने-अपने सयानेपन से जो मर्जी किया करेंगे। सो, जो बुर्जुग हुए उनके लिए तो गांव-गांव में जो मंदिर बनाये हैं, वहां बैठ कर भजन करना और दो वक्त जाकर खाना खा आना.... तथा जिसे सुखी रहना हो, उसे तो पहले जो मान पकड़ रखा हो; वह छोड़ देना–वर्ना पूजा होगी। इस बारे समझाया कि गुरु-चेला, बाप-बेटा और सास-बहु यूं रहें और दास के दुश्मन हरि कभी हो नहीं सकते, जो भी करेंगे उसी में सुख मिलेगा। क्यों ना हम में जो वासनायें होंगी, उन्हें टालने के लिए ऐसा होता हो? यूं मानना और सुखी रहना। *प्र-6, 50*

609. **धूल जितनी भी जिस व्यक्ति में बरकत नहीं, उसके आगे भी हमें हाथ जोड़ने पड़ते हैं क्योंकि उसे मंदिर में रखने की गरज है। व्यवहार लेकर बैठे हैं, सो क्या करें? वर्ना तो ऐसा कुछ करें ही नहीं, लेकिन महाराज को प्रसन्न करना है।** *प्र-6, 51*

611. जिसे सुखी होना हो, उसे तो लड़का सोलह साल का होने पर तुलसी के पत्ते स्त्री को अर्पण करने देना, सो झंझट टली ! कुछ भी करो, जीव को सुख नहीं। यदि ऐसा लड़का मरेगा तो भी जीव दुःखी होगा। एक ब्राह्मण का लड़का मर गया, तब फूट-फूट कर रोया और दूसरों को भी रुलाया। 'बहुत सयाना था और यह करता था, वह करता था'–यूं हजारों बातें करें। तब मयाराम भट्टजी अफसोस करने गये और जब नहाने गये तब कहा कि–तू खाता-करता नहीं यह क्या बात है? यह तेरा लड़का मर गया तो क्या कोई उदयपुर की गद्दी खाली हो गई? यह एक ब्राह्मण मरा वह तो एक भिक्षा मांगने वाला कम हो गया–उसमें क्या हुआ? फिर उसने सोचा, तो उसे यह सच बात लगी। फिर बोला–मैं तो पंद्रह दिन में मर जाता, आपने ही जीवित रखा ! संसार में किसान कम हैं? बनिया, दर्जी, नागर, सुनार, लुहार, मिस्त्री इत्यादि की कोई कमी है? यूं ज्ञान सीखना। कानखजुरे का एक पांव टूटा हुआ हो तो भी क्या और अच्छा रहा तो भी क्या? मुर्गा यदि सुबह बांग नहीं देगा, तो क्या सुबह नहीं होगी? इसमें क्या? यूं विचार कर सुख से भजन करना।

प्र-6, 52

✡ ✡ ✡

रंगीली छबि का कहना क्या.....

(राग:प्यार किया तो डरना क्या.....'मुग़ले आज़म')

रंगीली छबि का कहना क्या,
निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
पारसमणि गुरुजी रुप मिली, पारसमणि.....
पारसमणि गुरुजी रुप मिली, भूले उन्हें तो जिया क्या !
रंगीली छबि का कहना क्या,
निर्गुण मूर्ति का कहना क्या;
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या.....

काकाजी के ही अनुग्रह से,
साधु मिले हैं लूटने जैसे } 2
चैतन्यों के शिल्पी मिले हैं,
चैतन्यों के शिल्पी मिले, फिर लौकिक अलौकिक माँगे क्या !
रंगीली छबि का कहना क्या,
निर्गुण मूर्ति का कहना क्या
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या.....

कम्प्यूटर से फ्लॉपी जैसे,
जुड़ जाएँ हम आपसे ऐसे } 2
अन्तर्यामी और सर्वज्ञ माने,
अन्तर्यामी और सर्वज्ञ माने, मन की चोरी छिपाना क्या !
रंगीली छबि का कहना क्या,
निर्गुण मूर्ति का कहना क्या.....
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या.....

मूर्ति अनेकों आपने दी हैं
आनंद कराया, स्मृतियाँ दी हैं,
आ.....आ.....आ.....आ.....
मूर्ति अनेकों आपने दी हैं,
आनंद कराया, स्मृतियाँ दी हैं,
मनन उनका निरन्तर करें हम,
मनन उनका निरन्तर करें हम, साधन और है करना क्या !
रंगीली छबि का कहना क्या,
निर्गुण मूर्ति का कहना क्या
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या.....
पारसमणि गुरुजी रूप मिली,
भूले उन्हें तो जिया क्या !
रंगीली छबि का कहना क्या
निर्गुण मूर्ति का कहना क्या
गुरुजी की मूर्ति का कहना क्या.....

निमंत्रण

जय स्वामिनारायण !

आओ, 15 मार्च '98, रविवार की सुबह
निम्न कार्यक्रम में मित्रमंडल सहित सपरिवार हाजिर रह कर
प्रगट गुणातीत स्वरूपों द्वारा नवदीक्षित पार्षदों–
पू. निर्दोष भगत एवं पू. ऋषि भगत को दी जाती
भागवती दीक्षा को निहारें
व
प.पू. गुरुजी की 61वीं जन्म जयंती मनायें
और.....
प.पू. काकाजी द्वारा हमें सौंपी गई उनकी इस जीवंत स्मृति–अमानत को
कई वर्षों तक हम सब के बीच संभाल कर रखने कृतसंकल्प होकर
हम सब मिल कर एक मन से
महाराज-स्वामी और सभी गुणातीत स्वरूपों को प्रार्थना करें !

–योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

स्थान : 'अनिर्देश' काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 दूरभाष : 7229327, 7249327

कार्यक्रम :

सुबह	–	7.00 से 7.45	:	भागवती दीक्षा विधि
सुबह	–	9.00 से 12.30	:	गुरुजयंती सभा
दोपहर	–	12.45	:	प्रसाद

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 8.3.98	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(2)	दि.12.3.98	गुरुवार	–	होली ब्र.स्व. भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन
(3)	दि.13.3.98	शुक्रवार	–	धुलेन्डी प.पू. साहेब की प्राकट्य तिथि प.पू. गुरुजी की जन्म जयंती
(4)	दि.15.3.98	रविवार	–	प.पू. गुरुजी की जन्म जयंती 'अनिर्देश' में मनायेंगे
(5)	दि.24.3.98	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III,
Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II,
New Delhi-110 064 Tel.: 5401210, 5402393

TO,